आकांक्षा
धनंजय चौधरी

आकांक्षा

धनंजय चौधरी

OnlineGatha – The Endless Tale

OnlineGatha – The Endless Tale

Published by: **OnlineGatha – The Endless Tale**

Address: Indradeep complex, Sanjay Gandhi Puram, Faizabad Road, Indranagar, Lucknow, 226016

Contact : 0522- 4004150, +91-9936649666

Website : www.onlinegatha.com

ISBN NO – 978-93-85818-33-2

Price : ₹ **49**

© All Rights including Copyrights reserved with the Author.

PUBLISHER NOTE

OnlineGatha is a division of **CompAddicts Infotech Pvt. Ltd.** Established in the month of January 2014, the site is a step into the online literary world. It works by connecting the hardcopy creations to the online world. Will provide platform to the newcomers to publish their creations and also utilize the existing resources for their further evolution. We can also add a feather to the hat of established writers by adding to their business and their income simultaneously. Now forget about the fussy laws and printing-publishing issues-for we are here, working day and night to make your dream come true.

चांदनी रात है क्या एहसास है
आँखों मैं बसता आपका संसार है

तुम्हे देखकर ऐसा लगता है

तुम्हे देखकर ऐसा लगता है
जैसे चाँद से चांदनी उतर आई है
तुम्हे देखकर ऐसा लगता है
जैसे धरती पर जन्नत उतर आई है
तुम्हे देखकर ऐसा लगता है
जैसे परीलोक से परी उतर आई है
तुम्हे देखकर ऐसा लगता है
जैसे ख़ूबसूरती अदाओ से झलक आई है

:- धनंजय चौधरी

प्रिय पाठकों ,

प्रस्तुत पुस्तक "आकांक्षा" नित प्रतिदिन मन में उठते ढेर सारी इच्छाओं, कल्पनाओ, अकांक्षाओ और भावनाओ से कुछ शब्द को चुनकर उसे पंक्तियो में ढालते हुए कविताओ और शायरी का मूर्त रूप देने का प्रयास है |

आशा करता हूँ की मेरी यह कृति आपको पसंद आएगी |

आप अपने सुझाव या प्रतिक्रिया मुझे भेज सकते हैं |

धनंजय चौधरी
H.No.107 9 ।
साकेत नगर
भोपाल (मoप्रo)
पिनकोड- 462024
मोo- 9009328326(उे वदसल)
इमेल- author.dchy@gmail.com

मेरी प्रेमिका	08
उस रिश्तों को मैं क्या नाम दूँ	12
जब से तुम्हे देखा	13
उसका रूठ के जाना	22
जब याद तुम्हारी आती है	26
जब याद तुम्हारी आती है	28
कलयुग में प्यार की परिभाषा	29
दीपावली के उपलक्ष्य में	31
ऐसा एक घर मिले	32
नए वर्ष का हुआ है आगाज़	33
मैं प्रेमी हूँ	34
आओ मनाये नववर्ष का त्यौहार	35
नववर्ष आया	36

मेरी प्रेमिका

थोड़ी नटखट थोड़ी चंचल
फिर भी मन को भाती है
मेरी प्रेमिका
बात बात मैं रूठना गुस्सा होना
उसकी आदत है
फिर भी मन को भाती है
मेरी प्रेमिका
दूसरों को परेशान करना
उसकी आदत है
फिर भी मन को भाती है
मेरी प्रेमिका
कब वो दौर आएगा
जब वो संभलेगी समझेगी
मेरी प्रेमिका

:- धनंजय चौधरी

बढाया हाथ दोस्ती का
पिलाया जहर प्यार का
सदमा लगा जुदाई का

आया ख्याल जान का
पिया गम अपने बर्बादी का
बहाया आँसू आँख का
जब ओझल हुआ चाँद अपने जहाँ का

अपने तो पराये निकले
पराये-पराये होकर भी अपने निकले
जो विश्वाश के काबिल थे
वही दगा दे गए
जिससे दगा की उम्मीद थी
वही जीने की वजह बन गए
जिनसे साथ की उम्मीद थी
वही छोड़कर चले गए
न चाहते हुए भी
अकेलापन घर कर गए
अपने तो पराये निकले
ओरों से क्या कहें

तेरी याद दिल से जाती नहीं
तेरी बाते मन मैं आती रही
तेरी अश्के मैं भूल पाता नहीं
तेरी सूरत नज़रों से हटती नहीं

तेरी याद दिल से जाती नहीं

जिस दिन से तुम्हे देखा है
अपने दिल को खोया है
जिस दिन से तुम्हे पाया है
बस तुम्हे ही चाहा है
जिस दिन से तूने नज़रे फेरी
मेरी किस्मत पलटी
उस दिन में भिखारी
आज मैं शराबी

प्यार के दरमियां क्या क्या बहाने रख दिए
कैद करके हमने सपने सिराहने रख दिए
भीगी पलकें उनके दामन से लिपट कर कह गयी
उम्र की राहों में हमने सारे ज़माने रख दिए
पलने लगे ख़वाब जब उन्होंने प्यार के अफसाने
कह दिए
नींद के कुछ लम्हे थे जागती आँखों के पास
लेकिन फिर उसने किस्से पुराने रख दिए

चलते-चलते उन्होंने
अपना घर दिखा दिया
देखते-देखते उन्होंने

प्यार करना सिखा दिया
रहते-रहते उन्होंने
दुनिया दिखा दिया
जाते-जाते उन्होंने
अपनों को रुला दिया

उस रिश्तों को मैं क्या नाम दूँ

उस रिश्तों को मैं क्या नाम दूँ
जिसमे कोई मंजिल न हो
उस रिश्तों को मैं क्या नाम दूँ
जिसमे नफरत की जगह हो
उस रिश्तों को मैं क्या नाम दूँ
जिसमे प्यार की कद्र न हो
उस रिश्तों को मैं क्या नाम दूँ
जिसमे विश्वास न हो
उस रिश्तों को मैं क्या नाम दूँ
जिसमे अंजाम मौत हो

जब से तुम्हे देखा

जब से तुम्हे देखा
अपना होश खोया
जब से तुम्हे देखा
हर किसी को भुलाया
जब से तुम्हे देखा
अपना सब कुछ लुटाया
जब से तुम्हे देखा
सिर्फ ख्यालों मैं खोया
जब से तुम्हे देखा
बस तुम्हे ही चाहा

महफ़िल मैं मेरी नज़र उन पर थी
पर उनकी नज़र कही और थी
एक मुस्कराहट के लिए तरसता रहा
पर क्या पता वो भी मेरे नसीब न थी

तेरी ख़ूबसूरती का
मैं कद्रदान हो गया
तेरी मोहब्बत मेरे लिए
वरदान हो गया

तेरी एहसान का मैं
एहसानमंद हो गया
तेरी मुस्कुराहट का
आज दीदार हो गया
तेरी बातों पर
मैं बेचैन हो गया
तेरी यादों से
मैं परेशान हो गया
तेरी मोहब्बत के लिए
मैं गुलाम हो गया
तेरी जिन्दगी मैं आने के लिए
मैं बेकरार हो गया

आँखों से आंसुओ की विदाई कर दो
दिल से ग़मों की जुदाई कर दो
बाँहों मैं आकर दूरियां मिटा दो
हमें अपना कर गिले शिकवे भुला दो

जो वादे उन्होंने किये
वो तो बस एक फ़साना था
जो कसमे उन्होंने दिए
वो तो बस एक बहाना था

जो वक्त उन्होंने बिताये
वो तो बस एक
भूला हुआ लम्हा था

खुद खामोश रहती है
दिल मैं धमाके कर जाती है
आँखों से क्या सितम ढाती है
दिल को बेकरार कर जाती है

दोस्ती करने का इरादा तो था
पर न जाने क्यों वो डरती थी
हाथ बढाकर दोस्ती का
इरादा बतायी थी
न जाने किस बात से
वो खफा हो गयी थी
दोस्ती का इंतज़ार था

पर क्या पता मेरी दोस्ती
नफरत मैं बदल गयी थी

ये आग बहुत पहले लगी
पानी से बूझती नहीं
ये जख्म बहुत पहले लगी
दवा से भरते नहीं
ये दिल ऐसी लगी
तेरे सिवा किसी की सुनती नहीं

इनके नखरे ऐसे जैसे
इनसे सुन्दर कोई नहीं है
अपने आप को
समझती है जैसे
चाँद का नूर है
दिलों से खेलती है जैसे
वो कोई खिलौना है
उन्हें समझाए कैसे
की प्यार कोई
खेल नहीं जिन्दगी है

ये दिल जल रहा है तेरे लिए
ये दिल मचल रहा है तेरे लिए
ये भटक रहा है तेरे लिए
तू पागल है उस बेवफा के लिए
यूँ न सितम पे सितम कर परायों के लिए
मैं जी रहा हूँ तेर लिए

हजारो को देखा
ये दिल किसी पे न पिघली
हजारों मैं एक ऐसा तुम्हे देखा
ये दिल देखते ही मचली

देखा उन्हें ट्रेन से उतरते-उतरते
बात की उनसे मै डरते-डरते
दोस्त बने देखते- देखते
ट्रेन छूटी बात करते-करते

तुम्हे देखा तो
अपनों का ख्याल आया
तुम्हे चाहा तो
उस बेवफा का याद आया
तुम्हे पाया तो
सारे जग को भुलाया

क्यों छोटे से बड़े हो गए हम
इस तिलस्मी दुनिया मैं खो गए हम
अपनों को भुला कर खुश हो रहे हम
इस तिलस्मी दुनिया मैं चूर हो गए हम
क्यों छोटे से बड़े हो गए हम

वो मेरी जरुरत
मैं उसकी जरुरत नहीं
वो मेरी धड़कन
मैं उसकी साँसे नहीं
वो मेरा सबकुछ
मैं उसकी कुछ भी नहीं

जब भी वो
बात करने की कोशिश करते हैं
हम उन्हें
नज़रंदाज़ कर देते हैं
कैसे बताये उन्हें की
मैं उनके काबिल ही नहीं

झूठ बोलकर झूठ को
यूँ न झूठलाया करो
झूठ बोलकर झूठ से

यूँ न नाता तोड़ा करो
झूठ बोलकर झूठ से
यूँ ही रिश्ता बनाया करो

तिरछी नज़र से
जब हमें वो देखते हैं
हम भी देख लिया करते हैं
कैसे बढ़ाये प्यार का कारवां
जब तक वो हामी नहीं भरते हैं

प्यार से भी ज्यादा प्यार करूँ
जान तुझ पे निसार करूँ
तेरी हर सपनो को साकार करूँ
जान से भी ज्यादा प्यार करूँ

देख-देख के वो हमें मुस्कुराती है
घूर घूर के वो हमें तरपाती है
दोस्त बन कर वो साथ निभाती है
गैरों के होकर वो हमें जालाती है

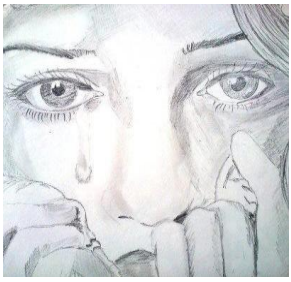

मुश्किल हो रहा उसे भुलाना
उससे बिछड़ के जाना
यादों मैं आकर यूँ रुलाना
उसे तनहा छोड़ के जाना

जिन्दगी उनकी याद बनकर रह गयी
नजरो मैं उसकी सूरत बस के रह गयी
पाने की कोशिश बहुत की हमने
पर वो दुसरे की होकर चली गयी

चोरी- चोरी दिल में न आया करो
यूँ दिल में आकर न तरपाया करो
धीरे- धीरे यूँ आँखों से न देखा करो
यूँ न दिल लगाया करो

जिन्दगी आपकी याद बन कर रह गयी
नज़रों में आपकी सूरत बस कर रह गयी

कोशिश बहुत की आपको भुलाने की
पर ये दिल आपकी होकर रह गयी

मुश्किल हो रहा है तुझे भुलाना
तुझसे बिछड जाना
यादों मैं तुम हर रोज आओगी
तन्हा मुझे कर जाओगी
उस वक्त तुम बहुत पछताओगी
जब तुम्हे मेरी याद आएगी

उसका यूँ घूर के देखना
दिल चुरा के ले जाना
चोरी-चोरी देख के मुस्कुराना
दीवाना बना के तड़पाना
अपना बना के यूँ रुलाना

उसका रूठ के जाना

उसका यूँ रूठ के जाना
यूँ मुझसे दूर जाना
खवाबों का टूट जाना
उसका रूठ के जाना
यूँ मुझे रुलाना
मेरा दिल दुखाना
उसका रूठ के जाना
यूँ मुझे सताना
मेरी नींदे चुराना
उसका रूठ के जाना

न मंजिल का पता
न मेरा ठिकाना
ये दिल है तन्हा
हो जायेगा दीवाना

वो ऑखें नशीली
वो चेहरा गुलाबी
उसके ख्यालों में
ये दिल है तन्हा

हो जाएगा शराबी

ज़माने से क्या शिकवा करूँ
जब वो ही रूठ जाये
उनसे क्या कहूँ
जब वो ही भूल जाएँ

जिन्दगी एक दर्द बन कर रह गयी
नज़रों में उनकी आँसू भर कर रह गयी
मानाने की कोशिश बहुत की
पर वो एक ख़वाब बन कर रह गयी

ज़माने से क्या शिकवा करूँ
जब वो ही रूठ जाये
उनका क्या एतवार करूँ
जब वो ही झूठ बोल जाये

कभी कभी थोडा ही सही बात कर लिया करो
यूँ चुप चुप बुत सी लगती हो
कभी कभी थोडा ही सही हंस भी लिया करो
यूँ गुम गुम नाखुश सी लगती हो
कभी कभी थोडा ही सही बात कर लिया करो
यूँ चुप चुप बेवफा सी लगती हो

मैं धड़कन हूँ तेरा
तू साँसे है मेरी
तेरा यूँ मुस्कुराना
जिन्दगी है मेरी

कभी-कभी थोडा ही सही हंस भी लिया करो
यूँ चुप-चुप बुत सी लगती हो
कभी-कभी थोडा ही सही हंस भी लिया करो
यूँ गुम-शुम नाख़ुश सी लगती हो
कभी-कभी थोडा ही सही याद भी कर लिया करो

प्यार इस कदर करता रहूँ
हर गम मिटाता रहूँ
आपकी एक ख़ुशी पर
हर जख्म छुपाता रहूँ

ये अदा ये फिजा ये मुस्कुराना
तेरा न जाने क्या रंग लायेगा
ये आशिकी ये दिल्लगी ये दीवानापन
तेरा न जाने क्या करवाएगा
ये गुस्सा ये फैशन ये पागलपन
तेरा न जाने क्या कहर ढाएगा

देख के मेरी ये अदाए
बैचैन बैचैन से लगते हो तुम
देख के मेरी ये हंसी
ख़ुशी ख़ुशी से रहते हो तुम
देख के मेरी ये सूरत
बदले बदले से लगते है फिजा

बहुत ही खुशनसीब हो तुम
जिससे मैंने प्यार किया
बहुत ही बेवक़ूफ़ हो तुम
जिसने इसे समझा ही नहीं
कभी आकर देखो मेरी महफ़िल में
बेक़रार है कितने आने को मेरी जिन्दगी में

चेहरे पर जो हंसी है
ये बस आपकी ही ख़ुशी है
पलकों में जिनका ख़वाब है
वहां बस आपका ही इंतज़ार है

जब याद तुम्हारी आती है

जब याद तुम्हारी आती है
आँखों से आँसू बहते है
तुझसे बिछड़ कर
ये दिल तन्हा तन्हा रहता है
जब सामने तुम होती हो
मन पुलकित हो जाता है
जब तुम रूठ जाती हो
मन व्याकुल हो जाता है
जब याद तुम्हारी आती है
आँखों से आँसू बहते है

उम्र के हर पडाव में
जिन्दगी के हर राहों में
कभी धुप की छाव में
तो कभी सर्द हवा की आँहों में
जब भी तुम याद आती हो
मुझे रुला जाती हो

चेहरे पर जो हंसी है
वो बस आपकी ही ख़ुशी है

आँखों में जो हया है
वो बस आपके प्यार की दया है
दिल में जो अरमान है
वहां के सिर्फ आप ही मेहमान है

कितने दिन बीत गए
आपके दीदार में
कितने ऋतुए बीत गए
बस आपके ही इंतज़ार में
पर न आप आये और न आँखों में
आपके आँसू आये हमारी याद में
जिन्दगी गुजार लिए हमने
बस आपके ही प्यार में

वतन की याद में

वतन से दूर होकर भी वतन मेरी आँखों में है
दूर होकर भी वो मेरी साँसों में है
सर्द आहों में खुशबू उस मिटटी की है
जो हर पल पल-पल हमें बुलाती है
अपनों की याद दिलाती है
मेरे अंतर्मन को जगाती है
वतन से दूर होकर भी वतन मेरी आँखों में है
दूर होकर भी वो मेरी साँसों में है

तेरी जिन्दगी सजा के
तेरी वादे निभा के
तुझे अपना बना के
आबाद हुआ तुझे भुला के

कलयुग में प्यार की परिभाषा

प्यार तो गुजरे ज़माने की बात है
अब हर सुख बिताना एक रात है
इकरार तो भूले लम्हों की बात है
इनकार तो हर रोज की बात है
साथ निभाना तो बस एक पाप है

धुप की तपिस में
फुल यूँ मुरझा गए
तुम्हे देखकर दिल
यूँ क्यों शरमा गए
आपकी एक हंसी पर
फुल यूँ जो खिलखिला गए
ये देखकर कर
हम आपको अपना बना गए

वो आये बनठन के
शबाब की तरह से
वो बन के आयी
शामत मेरी नजर में
मैं पी गया शराब

दोस्तों की वजह से
वो बन के ढायी कयामत
शराब की वजह से
वो खुद को लुटा बैठी
अपनी आशकी की वजह से

दीपावली के उपलक्ष्य में

जगमग-जगमग दीप जले
दीये दीप खूब जले
बच्चो के दिल खिले
खूब फुलझरी पटाखे मिले
इस पर्व को दीपावली कहे
जिसमे लोगों को ढेर सारी खुशिया मिले

ऐसा एक घर मिले

ऐसा एक घर मिले
जहाँ खुशियां मिले
सपनो को उड़ान मिले
होसलों को अंजाम मिले
कपटी बईमान ना मिले
सिर्फ सीधा साधा इंसान मिले
ऐसा एक घर मिले

नए वर्ष का हुआ है आगाज़

नए वर्ष का हुआ है आगाज़
मेरे दिलों से आयी है आवाज़
मिले सबों को खुशियों की सोगात
आओं मिलकर करे शुरुआत
आओ मिलाएं बिछड़े इंसान
खाओ और खिलाओ पकवान
अतीत को भुलाओ करो नयी शुरुआत
नए वर्ष का हुआ है आगाज़

अब बस भी करो
लड़ाई झगड़ो को दूर करो
भाईचारे को पास करो
यूँ न समय बर्बाद करो
अब बस भी करो
शांति से रहा करो

<u>में प्रेमी हूँ</u>

में प्रेमी हूँ
तेरा आशिक हूँ
तेरे इश्क में पागल हूँ
में प्रेमी हूँ
तेरा दीवाना हूँ
तेरे अदाओ पे पागल हूँ
में प्रेमी हूँ
तेरा मजनू हूँ
तेरे वाफाओ में पागल हूँ
में प्रेमी हूँ

नजरों को समझना होगा
दिल को काबू में करना होगा
मेरे खातिर आपको समझना होगा
न कोई बहाना होगा
अब तो आपको समझना होगा

आओ मनाये नववर्ष का त्यौहार

आओ मनाये नववर्ष का त्यौहार
चारो और हर्षोंउलास
आओ मनाये नववर्ष का त्यौहार
खाओ और खिलाओ ढेर सारे पकवान
आओ मनाये नववर्ष का त्यौहार
मिलजुल कर मनाओ यह त्यौहार
आओ मनाये नववर्ष का त्यौहार
भाईचारे और एकता को दिखाओ
आओ मनाये नववर्ष का त्यौहार

कहीं दूर एक हसीना थी
जिसे मैं निहारा करता था
मेरे शरीर पर मेरे दिलों दिमाग पर
वो एक गहरी याद थी
जिसे किसी ने पहचाना नहीं
और जिसे मैंने भुलाया नहीं

नववर्ष आया

नववर्ष आया
उत्सव लाया
नववर्ष आया
ढेर सारी खुशिया लाया
नववर्ष आया
उम्मीद की किरने लाया
नववर्ष आया
एक दूसरे की याद दिलाया
नववर्ष आया
धर्म की दीवार हटाया
नववर्ष आया

कहीं पानीयो में डूबा हुआ
मैं एक पत्थर हूँ
जिसे बारिश ने भिगोया नहीं
जिसे सूरज ने तपाया नहीं
हर चीज से बेखबर
मुझे किसी की फ़िक्र नहीं

यहाँ भी धुआ
वहां भी धुआ
ये जहाँ भी धुआ
ये शमा भी धुआ
यहाँ तू भी धुआ
यहाँ मैं भी धुआं
हर सांस धुआ
इधर भी धुआ
उधर भी धुआ
चारों और सिर्फ धुआ ही धुआ

पथरों के दरमियान क्या क्या फसाने रख दिए
कैद करके हमने लम्हों मैं ज़माने रख दिए
भीगी पलकें उनके दामन से लिपट कर कह गयी
उम्र भर की सारी बंदिशे तोड कर कह गयी
दिल थाम के हमने प्यार के किस्से कह दिए
मैं तुम और मेरी तन्हाई जब एक होकर रह गयी

लेखक परिचय

मै धनंजय चौधरी प्रोफेशनली मैकेनिकल इंजीनियर हूँ कोई लेख़क नहीं । अपनी कल्पनाओ, भावनाओं, अकांक्षाओ को कविताओं और शायरी के रूप में पन्नों पर उतारने की कोशिश की है क्योंकि यह मेरा जूनून है ।

ये कवितायेँ और शायरी मेरी चेतना को जीवीत रखने का काम करती है ।

मेरे प्यारे पाठको ,

कविताओं को दिल से ना लगाना
शायरी पर अर्ज़ फरमाना
कुछ बुरा लगे तो माफ़ करना
मनोरंजन करने की कोशिश की है
दिल दुखाना मेरी फितरत नहीं

:- धनंजय चौधरी

प्यार के दरमियां क्या क्या बहाने रख दिए
कैद करके हमने सपने सिराहने रख दिए
भीगी पलकें उनके दामन से लिपट कर कह गयी
उम्र की राहों में हमने सारे ज़माने रख दिए
पलने लगे ख़वाब जब उन्होंने प्यार के अफसाने कह दिए
नींद के कुछ लम्हे थे जागती आँखों के पास
लेकिन फिर उसने किस्से पुराने रख दिए

रू धनंजय चौधरी

OnlineGatha - The Endless tale
OG
खुद खामोश रहती है दिल मैं धमाके कर जाती है।
आँखों से क्या सितम ढाती है दिल को बेकरार कर जाती है।।
खुद खामोश रहती है दिल मैं धमाके कर जाती है।
आँखों से क्या सितम ढाती है दिल को बेकरार कर जाती है।।
तेरी याद दिल से जाती नहीं तेरी बाते मन में आती रही तेरी
अश्के में भूल पाता नहीं तेरी सूरत नज़रों से हटती नहीं
तेरी याद दिल से जाती नहीं
Book Also Available At
amazon.in SHOPCLUES paytm flipkart
ISBN:978-93-86818-33-2
₹ 34
Download e-book at onlinegatha.com